''पूर्ण शराबबंदी ही 'निर्भया' को सच्ची श्रद्धांजली''

—स्वामी अग्निवेश

नई दिल्ली , 16 दिसम्बर 2014

आज 'निर्भया' के पैशाचिक बलात्कार एवं उसकी नृशंस हत्या की भयानक घटना को दो वर्ष पूरे हो गये। इस काण्ड के बाद जन साधारण का एक अप्रत्याशित आन्दोलन देखने को मिला जिसने सरकार को उसकी निद्रावस्था से झकझोर दिया। सरकार ने तुरन्त ही बलात्कार एवं नारी हिंसा रोकने के लिए एक कठोर कानून लाने का वायदा कर अपना पल्ला झाड़ लिया। आज दो वर्ष पश्चात् क्या हम कह सकते हैं कि उस अभूतपूर्व जन आन्दोलन के बावजूद और सरकार के कड़े कानून के बाद आज हमारी माताएँ, बहनें, बेटियाँ सब सुरक्षित हैं? क्या इस प्रकार के दस और कानून बनाने से भी हम अपनी बहनों और बेटियों को सुरक्षित रख पायेंगे? इन सब अमानवीय कुकृत्यों के पीछे के कारण सामाजिक हैं। समाज में जब तक उपभोक्तावाद एवं मदिरापान की विषैली संस्कृति धड़ल्ले से अपनी जड़ें जमाती रहेंगी तब तक ऐसे अनगिनत बलात्कार एवं छेड़छाड़ की घटनाओं को रोकना नामुमकिन है। ऐसी अधिकतम घटनाओं एवं सड़क हादसों के मूल में शराब है।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने अभी ड्रग्स के खिलाफ जबरदस्त भाषण दिया था जिसके लिए हम उनको साधुवाद देते हैं लेकिन जब तक ड्रग्स के साथ वो शराब को भी खत्म करने की बात नहीं करते तब तक उनका संकल्प एवं सपना अधूरा है। आगे भविष्य में 'निर्भया' जैसी घटना न हो इसके लिए मैं सीधे तौर पर पूरे देश में संविधान की धारा 47 के अनुसार एवं महात्मा गांधी के संकल्पों के अनुसार पूर्ण शराबबंदी तुरन्त प्रभाव से लागू करने की प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी से अपील करता हूँ। जब तक शराब के क्रय–विक्रय का इसी तरह सरलीकरण रहेगा तब तक बलात्कारों को रोकना असम्भव है। नशामुक्त भारत एवं पूर्ण शराबबंदी की तरफ बढ़ना ही निर्भया को सच्ची श्रद्धांजली होगी।